उग्रवादी आन्दोलन की प्रगति और कांग्रेस की फूट (नरम दल और गरम दल) –

सन् 1905 बंगाल विभाजन की घटना की घटना के पश्चात कांग्रेस में एक ऐसा वर्ग उत्पन्न हो गया जो उदारवादियों की नीतियों और साधनों में ~~पश्चात~~ विश्वास नहीं रखता है था। जो उग्रवादी अहिंसात्मक साधनों द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना चाहते थे। यह वर्ग सन् 1907 तक कांग्रेस ताक कांग्रेस में रहकर और 1907 के सूरत अधिवेशन की फूट के बाद सन् 1916 तक कांग्रेस के बाहर रहकर उग्रवादी आन्दोलन चलाते रहे। तदपश्चात सन् 1916 में गरम दल और नरम दल में पुनः एकता स्थापित हो जाने पर महात्मा गाँधी के राजनीति में पदार्पण तक यह लोग निरन्तर कार्य करते रहे। सुविधा की दृष्टि से राजनीति में निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत स्पष्ट है–

1. सन 1905 का बनारस का अधिवेशन
2. सन् 1906 का कलकत्ता का अधिवेशन
3. सन् 1907 का कांग्रेस का सूरत का अधिवेशन सूरत में और कांग्रेस में फूट–

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया